सं. ग्रो.वि./एफ.डी./56-85/40 10 -- चूंकि हरियाणी के राज्यपाल की राय है कि मैं बीके इण्डस्ट्रीज, व्लाट नं 122, सैक्टर-6, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री वीर सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्विष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की कई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल उसके द्वारा सरकारी अधिस्चना सं. 5415-3-अभ-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुमंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायानिणय एवं पंचाट तीन मास में देने के हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथया संबंधित मामला है:—

क्या श्री बीर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं थो.वि एफ डी / 56-85/40117. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. बीके इन्डस्ट्रीज, प्लाट नं 122, सैक्टर 6, फ़रीदाबाद, के श्रमिक श्री हंस राज तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, मौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अमें, 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त तथा उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा मंबिधत मामला है :--

क्या श्री हैंस राज की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो.वि./एफ.डी./98-85/40136.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं (1) परिवहन श्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) हरियाणा राज्य परिवहन, फरीदाबाद के श्रमिक श्री राकेश कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्ठितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हिरयाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिष्ठसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिष्ठित्यम की धारा 7 के श्रिष्ठीन गठित श्रम यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रवन्धको तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है;

क्या श्री राकेण कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं ग्रो.वि/एफ.डी./163-85/40144.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है मैं कि श्री भगवान दास कन्द्रैक्टर मार्फत जैको स्टील फास्टनसे प्रा० लिंक, प्लाट नं 269/24, फरीदाबाद, (2) मैं क जैको स्टील फास्टनसे प्रा० लिंक, प्लाट नं 269/24, फरीदाबाद के श्रीमक श्री रामाधर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिवांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495/जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिणय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतुं निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री रामाधर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?